classmate
Date
Page

By SATYABHAMA CHANDRA
Department of Psychology
APSM College, Barauni, Begusarai
LNMU, Darbhanga, Bihar

B.A- III (H) Paper- VIth Date -15/04/21

Scanned by TapScanner

(1)

Page No: Date:

The Classical Era
(क्लासिकी युग)

इस युग की अवधि 1900 – 1930 तक माना जाता है। इसी अवधि में प्रबन्ध के सामान्य सिद्धांत के विकास आरंभ हुआ। निम्नलिखित मनोवैज्ञानिकों का योगदान संगठनात्मक व्यवहार में मुख्य रहा है, जो इस प्रकार हैं :—

(a) फ्रेडरिक टेलर के योगदान → Taylor पेन सिल्वानिया में स्टील कम्पनियों में मैकेनिकल इंजीनियर की हैसियत से काम करते थे। संगठनात्मक मनोविज्ञान के विकास में फ्रेडरिक टेलर ने अपनी पुस्तक 'Principles of Scientific Management' में किसी कार्य को सबसे अच्छी तरह कैसे किया जाए, इसकी वैज्ञानिक विधि का वर्णन किया। इन्होंने उत्पादन क्षमता को उन्नत बनाने के लिए स्थायित्व को निर्धारित करने के लिए कर्मचारी तथा प्रबंध में मानसिक क्रांति लाने का प्रयास किया। इन्होंने प्रबंध के निम्नलिखित चार सिद्धांतों या नियमों का उल्लेख किया :—

(i) मानक कार्य अभ्यास को विकसित करना → इस नियम के अनुसार वैज्ञानिक प्रबन्ध का प्रथम नियम है, मानक कार्य अभ्यास को निश्चित तथा विकसित करना। इसके लिए आवश्यक होता है कार्य के विभिन्न पहलुओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना तथा उनकी सार्थकता को निर्धारित करना। इसके साथ-साथ कर्मचारियों द्वारा उपयोग किए जाने

Scanned by TapScanner

वाले उपकरणों को मानकीकृत बनाने का प्रयास किया जाता है।

(ii) प्रत्येक कर्मचारी का चयन वैज्ञानिक ढंग से करना
→ इस नियम के अनुसार कर्मचारियों का चयन विधिवत रूप से किया जाना चाहिए।

(iii) मानक कार्यविधियों के अनुकूल कार्य के लिए प्रबंध तथा कर्मचारियों का सहयोग करना।

(iv) योजनाओं का निर्माण करना तथा नियोजित कार्यों को पूरा करना।

उपर्युक्त चार ~~सिद्धांत~~ सिद्धांतों के आधार पर वास्तव में प्रबंधन तथा कर्मचारी के बीच कार्य - विभाजन का उल्लेख किया गया है। मैनेजर कार्य की योजना बनाता है तथा कार्य अधिकल्प का निर्माण करता है। वह कार्य आवंटन बनाता है, निष्पादन लक्ष्यों निर्धारित करता है तथा समय सारणी का निर्माण करते हैं। मैनेजर मानक कार्यविधियों के अनुकूल काम करने के लिए कर्मचारियों का चयन करते हैं तथा उन्हें प्रशिक्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त मैनेजर कर्मचारियों को उनके कार्य के स्वरूप के अनुकूल पुनर्निर्देशन भी देते हैं।

To be continue - - -

Satyaprama
15/04/21